समाजवाद Socialism

समाजवाद आधुनिक युग में सर्वाधिक लोकप्रिय विचारधारा है। इस विचारधारा का उदय व्यक्तिवाद की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ है। समाजवाद का आधारभूत उद्देश्य समानता की स्थापना करना है। समाजवाद प्रत्येक व्यक्ति को राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक सभी क्षेत्रों में कम से कम असमानता रखना चाहता है। इसका मूल लक्ष्य सामूहिक हित की प्राप्ति है। समाजवाद राज्य के कार्यक्षेत्र संबंधी एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

समाजवाद की परिभाषाएँ :→ समाजवाद को निम्नलिखित परिभाषाओं से परिभाषित किया गया है :→

~~(i) सेलर्स के अनुसार → "समाजवाद का ध्येय वर्गविहीन समाज की स्थापना है"~~

(i) सेलर्स के अनुसार :→ "समाजवाद एक प्रजातांत्रिक आर्थिक आन्दोलन है जिसका उद्देश्य अधिकाधिक न्याय एवं स्वतंत्रता की प्राप्ति है"

(ii) आचार्य नरेन्द्रदेव के अनुसार :→ "समाजवाद का ध्येय वर्गविहीन समाज की स्थापना है। यह वर्तमान समाज का संगठन इस प्रकार करना चाहता है कि परस्पर विरोधी स्वार्थ वाले वर्ग – शोषक और शोषित; पीड़क और पीड़ित का अन्त हो जाय।"

(iii) आर. सी. कोकर के अनुसार :→ "समाजवाद के अनुसार भूमि तथा उत्पादन के समस्त साधन समाज की संपत्ति हों और उनका प्रयोग तथा संचालन समाज द्वारा समाज के हित में किया जाय।"

(iv) इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार :→ "समाजवाद वह नीति या सिद्धांत है जिसका उद्देश्य एक लोकतंत्रीय केन्द्रीय सत्ता के कार्य द्वारा प्रचलित व्यवस्था की अपेक्षा धन का श्रेष्ठतम वितरण एवं उसके अधीन रहते हुए धन का श्रेष्ठतम उत्पादन होता है।"

Scanned with OKEN Scanner

समाजवाद की प्रमुख विशेषताएँ :→ समाजवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

(I) व्यक्ति की अपेक्षा समाज की महत्ता :→ समाजवादी विचारकों की धारणा है कि "समाजवाद का अभिप्राय है कि व्यक्ति के हितों को सामाजिक हित के अधीन करना," समाजवादी कहते हैं कि सामूहित एक अकेले के हित से अधिक मूल्यवान है इसलिए समस्त समाज के कल्याण के लिए व्यक्तिगत हित का बलिदान किया जा सकता है। व्यक्ति चाहे कितना ही बुद्धिमान, योग्य, विद्वान क्यों न हो किन्तु उसके हित तथा स्वार्थ समाज के सभी व्यक्तियों के सामूहिक हितों और स्वार्थों की अपेक्षा उच्च और ~~महत्ता~~ महान नहीं हो सकते।

(II) समाजवाद का उद्देश्य पूँजीवाद का अंत करना है :→ समाजवाद का प्रमुख उद्देश्य आर्थिक क्षेत्र में अधिक से अधिक समानता प्रदान कर पूँजीवाद का अंत करना है। समाज में दो वर्ग हैं 'पूँजीपति और श्रमिक'। पूँजीपतियों ने अपनी पूँजी के माध्यम से समाज के समस्त उत्पादन के साधनों पर आधिपत्य स्थापित कर लिया है तथा वे इनका उपभोग अपने व्यक्तिगत हित के साधने में कर रहे हैं, जिसके कारण कुछ लोग निरंतर धनी और धनवान होते जा रहे हैं, जबकि अधिकांश निर्धन लोगों की निर्धनता में और भी वृद्धि होती जा रही है।

(III) उत्पादन तथा वितरण के साधनों पर समाज का नियंत्रण :- समाजवादियों का विचार है कि सम्पत्ति कुछ लोगों के हाथ में न होकर समाज या राज्य के हाथ में होनी चाहिए ऐसी स्थिति में उत्पादन, उपभोग और वितरण के साधनों का उपयोग व्यक्ति विशेष के हितों में न होकर समाज के हित में होगा।

(IV) समाजवाद मानवीय परिस्थितियों में समानता पर बल देता है :- समाजवादी मानवीय असमानता को अमानवीय एवं अनैतिक मानते हैं। वे इस बात के कट्टर विरोधी हैं कि समाज में एक व्यक्ति विलासिता का जीवन व्यतीत करे और समाज के अन्य सदस्य विभिन्न अभावों से ग्रसित होकर भरपेट भोजन भी न कर सकें तथा अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति से भी वंचित रहें।

Scanned with OKEN Scanner